देश की सरकार भगत सिंह को शहीद नहीं मानती है, जबकि आजादी के लिए अपनी जान न्योछावर करने वाले भगत सिंह हर हिन्दुस्तानी के दिल में बसते हैं। भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर 1907 को लायलपुर जिले के बंगा में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है। उस समय उनके चाचा अजीत सिंह और श्वान सिंह भारत की आजादी में अपना सहयोग दे रहे थे। ये दोनों करतार सिंह सराभा द्वारा संचालित गदर पाटी के सदस्य थे। भगत सिंह पर इन दोनों का गहरा प्रभाव पड़ा था। इसलिए ये बचपन से ही अंग्रेजों से घृणा करने लगे थे। भगत सिंह करतार सिंह सराभा और लाला लाजपत राय से अत्यधिक प्रभावित थे।

13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह के बाल मन पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला। लाहौर के नेशनल कॉलेज़ की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने 1920 में भगत सिंह महात्मा गांधी द्वारा चलाए जा रहे अहिंसा आंदोलन में भाग लेने लगे, जिसमें गांधी जी विदेशी समानों का बहिष्कार कर रहे थे। 14 वर्ष की आयु में ही भगत सिंह ने सरकारी स्कूलों की पुस्तकें और कपड़े जला दिए। इसके बाद इनके पोस्टर गांवों में छपने लगे। भगत सिंह पहले महात्मा गांधी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन और भारतीय नेशनल कॉन्फ्रेंस के सदस्य थे। 1921 में जब चौरा-चौरा हत्याकांड के बाद गांधीजी ने किसानों का साथ नहीं दिया तो भगत सिंह पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा। उसके बाद चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में गठित हुई गदर दल के हिस्सा बन गए।

उन्होंने चंद्रशेखर आजाद के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया। 9 अगस्त, 1925 को शाहजहांपुर से लखनऊ के लिए चली 8 नंबर डाउन पैसेंजर से काकोरी नामक छोटे से स्टेशन पर सरकारी खजाने को लूट लिया गया। यह घटना काकोरी कांड नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। इस घटना को अंजाम भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद और प्रमुख क्रांतिकारियों ने साथ मिलकर अंजाम दिया था। काकोरी कांड के बाद अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन के क्रांतिकारियों की धरपकड़ तेज कर दी और जगह-जगह अपने एजेंट्स बहाल कर दिए। भगत सिंह और सुखदेव लाहौर पहुंच गए। वहां उनके चाचा सरदार किशन सिंह ने एक खटाल खोल दिया और कहा कि अब यहीं रहो और दूध का कारोबार करो।

SMARTECH EDUCATION

वे भगत सिंह की शादी कराना चाहते थे और एक बार लड़की वालों को भी लेकर पहुंचे थे। भगतसिंह कागज-पेंसिल ले दूध का हिसाब करते, पर कभी हिसाब सही मिलता नहीं। सुखदेव खुद ढेर सारा दूध पी जाते और दूसरों को भी मुफ्त पिलाते। भगत सिंह को फिल्में देखना और रसगुल्ले खाना काफी पसंद था। वे राजगुरु और यशपाल के साथ जब भी मौका मिलता था, फिल्म देखने चले जाते थे। चार्ली चैप्लिन की फिल्में बहुत पसंद थीं। इस पर चंद्रशेखर आजाद बहुत गुस्सा होते थे। भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसंबर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज़ अफसर जेपी सांडर्स को मारा था।

इसमें चन्द्रशेखर आज़ाद ने उनकी पूरी सहायता की थी। क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने अलीपुर रोड दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल असेंबली के सभागार में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज़ सरकार को जगाने के लिये बम और पर्चे फेंके थे। भगत सिंह क्रांतिकारी देशभक्त ही नहीं बल्कि एक अध्ययनशीरल विचारक, कलम के धनी, दार्शनिक, चिंतक, लेखक, पत्रकार और महान मनुष्य थे। उन्होंने 23 वर्ष की छोटी-सी आयु में फ्रांस, आयरलैंड और रूस की क्रांति का विषद अध्ययन किया था। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, बंगला और आयरिश भाषा के मर्मज्ञ चिंतक और विचारक भगतसिंह भारत में समाजवाद के पहले व्याख्याता थे। भगत सिंह अच्छे वक्ता, पाठक और लेखक भी थे।

उन्होंने 'अकाली' और 'कीर्ति' दो अखबारों का संपादन भी किया। जेल में भगत सिंह ने करीब दो साल रहे। इस दौरान वे लेख लिखकर अपने क्रांतिकारी विचार व्यक्त करते रहे। जेल में रहते हुए उनका अध्ययन बराबर जारी रहा। उस दौरान उनके लिखे गए लेख व परिवार को लिखे गए पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण हैं। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूंजीपतियों को अपना शत्रु बताया है। उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहें एक भारतीय ही क्यों न हो, वह उनका शत्रु है। उन्होंने जेल में अंग्रेज़ी में एक लेख भी लिखा जिसका शीर्षक था 'मैं नास्तिक क्यों हूं'? जेल में भगत सिंह व उनके साथियों ने 64 दिनों तक भूख हड़ताल की। उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिए थे। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फांसी दे दी गई।

SMARTECH EDUCATION

संगोल संप्रभुता और शक्ति का एक ऐतिहासिक प्रतीक है जिसका तमिलनाडु, भारत में सांस्कृतिक महत्व है। यह एक पारंपरिक शाही प्रतीक है जो चोल वंश का प्रतिनिधित्व करता है, जिसने 9 वीं से 13 वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत पर शासन किया था। संगोल एक अनूठा प्रतीक है जिसका उपयोग चोलों द्वारा सदियों से किया जाता रहा है और अब भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय गौरव और विरासत के प्रतीक के रूप में अपनाया गया है। संगोल का एक लंबा और आकर्षक इतिहास है जो चोल वंश का है। चोल अपने सैन्य कौशल, प्रशासनिक कौशल और सांस्कृतिक उपलब्धियों के लिए जाने जाते थे।

वे कला, साहित्य और वास्तुकला के महान संरक्षक थे और अपने पीछे एक समृद्ध विरासत छोड़ गए जो आज भी दक्षिण भारतीय संस्कृति को प्रभावित करती है। संगोल मूल रूप से चोल राजाओं द्वारा उनकी शक्ति और अधिकार को इंगित करने के लिए शाही प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया गया था। ऐसा माना जाता है कि यह संस्कृत शब्द 'संकल्पम' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'दृढ़ संकल्प' या 'संकल्प'। प्रतीक में दो मछली जैसे जीव होते हैं जो एक दूसरे के सामने होते हैं जिनके बीच में एक गोलाकार वस्तु होती है।

गोलाकार वस्तु को सूर्य या चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करने के लिए कहा जाता है, जबकि मछली जैसे प्राणियों को प्रजनन और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। तमिलनाडु में संगोल का बहुत सांस्कृतिक महत्व है और इसे गर्व और विरासत का प्रतीक माना जाता है। इसका उपयोग अक्सर धार्मिक समारोहों, सांस्कृतिक त्योहारों और राजनीतिक कार्यक्रमों में किया जाता है। प्रतीक कई प्राचीन मंदिरों, मूर्तियों और कलाकृतियों पर भी पाया जाता है, जो दक्षिण भारतीय संस्कृति में इसके महत्व की गवाही देते हैं। संगोल चोल मार्शल आर्ट परंपरा से भी जुड़ा हुआ है, जो आज भी तमिलनाडु में प्रचलित है। मार्शल आर्ट फॉर्म, जिसे सिलंबम के नाम से जाना जाता है, दो छड़ों का उपयोग करता है जो आकार में सांगोल प्रतीक के समान हैं। छड़ी का उपयोग प्रतीक में मछली जैसे प्राणियों के आंदोलनों को अनुकरण करने के लिए किया जाता है, जिससे संगोल सिलंबम परंपरा का एक अभिन्न अंग बन जाता है।

SMARTECH EDUCATION

हाल ही में, भारत सरकार ने घोषणा की कि वह नए संसद भवन में एक संगोल स्थापित करेगी जो वर्तमान में नई दिल्ली में निर्माणाधीन है। इस निर्णय को मिश्रित प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ा, कुछ लोगों ने इसे राष्ट्रीय गौरव और विरासत के प्रतीक के रूप में सराहा, जबकि अन्य ने इसे एक राजनीतिक कदम के रूप में आलोचना की। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के अनुसार, संगोल का एक लंबा और समृद्ध इतिहास है जो भारतीय संस्कृति में गहराई से निहित है। उन्होंने कहा कि नए संसद भवन में सांगोल की स्थापना भारत के गौरवशाली अतीत और इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाने का काम करेगी।

संगोल संप्रभुता और शक्ति का प्रतीक है जिसका तमिलनाडु, भारत में बहुत सांस्कृतिक महत्व है। यह एक पारंपरिक शाही प्रतीक है जो चोल वंश का प्रतिनिधित्व करता है और सदियों से शक्ति और अधिकार को इंगित करने के लिए उपयोग किया जाता रहा है। संगोल चोल मार्शल आर्ट परंपरा से भी जुड़ा हुआ है और दक्षिण भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। नए संसद भवन में संगोल की स्थापना भारतीय संस्कृति में इसके महत्व का प्रमाण है और यह भारत के गौरवशाली अतीत और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाता है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने नए संसद भवन के उद्घाटन को लेकर बताया कि नए भवन में सेंगोल की स्थापना की जाएगी।

अमित शाह ने बताया कि संसद भवन के उद्घाटन के साथ ही एक ऐतिहासिक परपंरा भी पुनर्जीवित होगी। इसी परंपरा को सेंगोल कहा जाता है, ये युगों से जुड़ी परंपरा है। इसे तमिल में सेंगोल कहा जाता है और इसका अर्थ संपदा से संपन्न होता है। नए संसद भवन में इसे स्पीकर के आसन के पास स्थापित किया जाएगा। संसद भवन में जिस सेंगोल की स्थापना होगी उसके शीर्ष पर नंदी विराजमान हैं। आखिर ये सेंगोल क्या होता है और इसका क्या महत्व है? आइए बताते हैं। सेंगोल का इतिहास काफी पुराना है। आजाद भारत में इसका बड़ा महत्व है। 14 अगस्त 1947 में जब भारत की सत्ता का हस्तांतरण हुआ, तो वो इसी सेंगोल द्वारा हुआ था। एक तरह कहा जाए तो सेंगोल भारत की आजादी का प्रतीक है। उस समय सेंगोल सत्ता के हस्तांतरण का प्रतीक बना था।

1947 में जब लॉर्ड माउंट बेटन ने पंडित नेहरू से पूछा कि सत्ता का हस्तांतरण कैसे किया जाए। तो पंडित नेहरू ने इसके लिए सी राजा गोपालचारी से मशवरा मांगा। उन्होंने सेंगोल प्रक्रिया के बारे में बताया। इसके बाद इसे तमिलनाडु से मंगाया गया और आधी रात को पंडित नेहरु ने स्वीकार किया। लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को एक अग्रवाल जैन परिवार में मुंशी राधा कृष्ण, एक उर्दू और फारसी सरकारी स्कूल शिक्षक और गुलाब देवी अग्रवाल के छह बच्चों के सबसे बड़े बेटे के रूप में फरीदकोट के धुदिके में हुआ था। ब्रिटिश भारत के पंजाब प्रांत का जिला (अब मोगा जिला , पंजाब , भारत में)। उन्होंने अपनी युवावस्था का अधिकांश समय जगराओं में बिताया। उनका घर अभी भी जगराओं में है और एक पुस्तकालय और संग्रहालय है।

उन्होंने जगराओं में पहला शैक्षणिक संस्थान आरके हाई स्कूल भी बनाया। लाजपत राय की प्रारंभिक शिक्षा सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रेवाड़ी, पंजाब प्रांत में हुई , जहाँ उनके पिता एक उर्दू शिक्षक के रूप में तैनात थे। 1880 में, उन्होंने कानून का अध्ययन करने के लिए लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में प्रवेश लिया, जहाँ वे लाला हंस राज और पंडित गुरु दत्त जैसे देशभक्तों और भावी स्वतंत्रता सेनानियों के संपर्क में आए। लाहौर में अध्ययन के दौरान वे स्वामी दयानंद सरस्वती के हिंदू सुधारवादी आंदोलन से प्रभावित हुए , मौजूदा आर्य समाज लाहौर (1877 में स्थापित) के सदस्य बने और लाहौर स्थित आर्य गजट के संस्थापक-संपादक बने। 1884 में, उनके पिता का रोहतक में स्थानांतरण हो गया, और राय लाहौर में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद साथ आ गए।

1886 में, वह हिसार चले गए जहाँ उनके पिता का तबादला हो गया था, और कानून का अभ्यास करना शुरू कर दिया और बाबू चूड़ामणि के साथ हिसार की बार काउंसिल के संस्थापक सदस्य बन गए। उसी वर्ष, उन्होंने महात्मा हंसराज को राष्ट्रवादी दयानंद एंग्लो-वैदिक स्कूल, लाहौर की स्थापना में मदद की, और उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की हिसार जिला शाखाओं और कई अन्य स्थानीय नेताओं के साथ सुधारवादी आर्य समाज आंदोलन की भी स्थापना की। इनमें बाबू चूड़ामणि (वकील), तीन तायल भाई शामिल थे(चंदू लाल तायल, हरि लाल तायल और बालमोकंद तायल), डॉ. रामजी लाल हुड्डा, डॉ. धनी राम, आर्य समाज पंडित मुरारी लाल , सेठ छाजू राम जाट (जाट स्कूल, हिसार के संस्थापक) और देव राज संधीर।

SMARTECH EDUCATION

1888 में और फिर 1889 में, उन्हें बाबू चूड़ामणि, लाला छबील दास और सेठ गौरी शंकर के साथ इलाहाबाद में कांग्रेस के वार्षिक सत्र में भाग लेने के लिए हिसार के चार प्रतिनिधियों में से एक होने का सम्मान मिला। 1892 में, वह लाहौर उच्च न्यायालय के समक्ष अभ्यास करने के लिए लाहौर चले गए। स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए भारत की राजनीतिक नीति को आकार देने के लिए, उन्होंने पत्रकारिता का भी अभ्यास किया, और द ट्रिब्यून सहित कई समाचार पत्रों में नियमित योगदानकर्ता थे। के प्रबंधन से भी जुड़े थेपंजाब नेशनल बैंक और लक्ष्मी बीमा कंपनी 1894 में अपने शुरुआती दौर में।

1914 में, उन्होंने खुद को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए समर्पित करने के लिए कानून का अभ्यास छोड़ दिया और 1917 में ब्रिटेन और फिर संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा की। अक्टूबर 1917 में, उन्होंने न्यूयॉर्क में इंडियन होम रूल लीग ऑफ़ अमेरिका की स्थापना की। वह 1917 से 1920 तक संयुक्त राज्य अमेरिका में रहे। उनका प्रारंभिक स्वतंत्रता संग्राम आर्य समाज और सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व से प्रभावित था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होने और पंजाब में राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने के बाद , लाला लाजपत राय वडवाल को मांडले भेज दिया गया था, लेकिन उन्हें तोड़फोड़ के लिए पकड़ने के लिए अपर्याप्त सबूत थे।

लाजपत राय के समर्थकों ने दिसंबर 1907 में सूरत में पार्टी अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए उनका चुनाव सुरक्षित करने का प्रयास किया, लेकिन वे सफल नहीं हुए। नेशनल कॉलेज के स्नातक, जिसकी स्थापना उन्होंने ब्रिटिश शैली के संस्थानों के विकल्प के रूप में लाहौर के ब्रेडलॉफ हॉल में की थी, उसमें भगत सिंह शामिल थे। 1920 के कलकत्ता विशेष सत्र में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। विभाजन के बाद, और भारत के कई हिस्सों में इसकी शाखाएँ हैं। उनके अनुसार, हिंदू समाज को जाति व्यवस्था, महिलाओं की स्थिति और अस्पृश्यता के खिलाफ अपनी लड़ाई लड़ने की जरूरत है। वेद हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे और स्वीकृत सभी को उन्हें पढ़ने और मंत्रों का उच्चारण करने की अनुमति दी जानी चाहिए। उनका मानना था कि सभी को वेदों को पढ़ने और सीखने की अनुमति दी जानी चाहिए।

SMARTECH EDUCATION

वही एक सवाल राजवीर को उसकी सोच से बाहर निकालता हैं और वो उस शख्स की तरफ देखता ही हैं, कि वह शख्स उस अनपुछे सवाल को भाँप लेता हैं और वही मंदिर की डेल पर राजवीर के पास बैठ जाता हैं। और खुद ही कहता हैं – मेरा नाम अशफाक़ हैं मैं मुस्लिम समाज से हूँ, रोजाना मंदिर आकर पुजा करता हूँ। राजवीर सुनकर आश्चर्य से पूछता हैं – यह अनोखा हैं ,क्या इसके पीछे कोई कारण हैं ? अशफाक़ मुस्कुराते हुये जवाब देता हैं – बरखुरदार ! हर एक बड़े काम या बदलाव के पीछे वजह जरूर होती हैं। यहाँ भी हैं। हमारी बीवी हिन्दू थी। उन्होने हमारे धर्म को दिल से अपनाया। यही एक उम्मीद उनकी आंखो मे हमारे लिए भी थी। पर हम जानकर भी अंजान बने रहे, क्यूंकि यह हमारी शान के खिलाफ जो था।

वो जीवन भर हमारे खातिर अपने भगवान से दूर रही और एक दिन वो हमसे दूर अपने भगवान के पास ही चली गई। उन्होने हमे एक खत लिखा था, जो उनके इंतकाल के बाद हमे मिला। उसमे लिखा था उन्हे अपने ईश्वर से बहुत प्रेम था, वो हमसे छिपकर, यहाँ इस मंदिर मे आ जाया करती थी। हमे बुरा ना लगे, इसलिए कभी बोल नहीं पाई, पर धोखा नहीं देना चाहती थी, इसलिए खत लिख दिया। उन्होने, हमारे प्यार के खातिर, हमारे अभिमान के खातिर, अपनी इच्छा कभी ज़ाहिर ना की। पर मरते – मरते वो हमे सच कह कर गई। तब हमे प्यार की कीमत समझ आई। इसलिए उनके जाने के बाद ही सही, पर हमने उनकी वो एक इच्छा पूरी की। अशफाक़ की बात खत्म हो जाती हैं। दोनों कुछ देर खामोश बैठ जाते हैं।

अशफाक़ की बातों से राजवीर के चेहरे पर बैचेनी सी हैं जिसे देख,अशफाक़ राजवीर से पूछता हैं – जनाब ! आप कुछ परेशान से लग रहे हो। राजवीर कुछ असहज सा हो जाता हैं और कहता हैं – नहीं ! ऐसा कुछ नहीं। अशफाक़ कहता हैं – बरखुरदार ! आपकी बैचेनी देख, कह सकता हूँ आप किसी सच से ही भाग रहे हो। राजवीर तेजी से वहाँ से उठकर जाने लगता हैं, जैसे अशफाक़ ने उसकी कोई चौरी पकड़ ली हो। अशफाक़ उसे रोकता हैं पर राजवीर तेजी से वहाँ से निकलकर अपनी कार मे बैठकर चला जाता हैं।

SMARTECH EDUCATION

राजवीर के दिमाग मे अशफाक़ की सारी बाते घूमने लगती हैं। राजवीर को रातभर नींद नहीं आती। सुबह होते ही वो फिर उसी मंदिर मे जाकर बैठ जाता हैं। फिर से उसकी मुलाक़ात अशफाक़ से होती हैं। अशफाक़ राजवीर के पास आकर बैठ जाता हैं। अशफाक़ समझ रहा हैं कि राजवीर उससे कुछ कहना चाहता हैं पर अशफाक़ चाहता हैं राजवीर खुद अपने अभिमान को तोड़कर सच को उनके सामने रखे, जिससे वो भाग रहा हैं। पर वहीं राजवीर चाहता हैं अशफाक़ उससे आगे से सवाल करे। पर, राजवीर कुछ नहीं बोल पाता। दो तीन दिनों तक यही चलता रहता हैं । आखिरकार एक दिन राजवीर खामोशी तोड़कर बोलता हैं – असल मे मेरी नौकरी मे थोड़ी दिक्कत हैं, बस इसलिये परेशान हूँ।

अशफाक़ ज़ोर – ज़ोर से हँसने लगता हैं – बरखुरदार ! इतने दिनों बाद, अपनी खामोशी तोड़ी भी तो झूठ बोलने के लिये। मियां ! हमारे बाल धूप मे सफ़ेद नहीं हुये हैं। आपका चेहरा साफ कह रहा हैं आप खुद से खफा हैं। खुद की गलती मानने की हिम्मत नहीं हैं आपमे। आप इस पुरुष प्रधान समाज के वही पुरुष हैं, जो अपने मन रूपी अकड़ मे इतने जकड़ गए, कि सच को स्वीकार नहीं कर पाते। अशफाक़ राजवीर को उसके ही असली रूप से पहचान करवाता हैं। राजवीर के दिल पर एक बोझ हैं, जिसे वो खुद से भी खुलकर नहीं कह पाया हैं और आज वो अपने जीवन के उस एक पहलू को अशफाक़ के सामने रखता हैं और कहता हैं, मैं एक मॉडर्न लड़की से शादी करना चाहता था।

पर मेरे माता – पिता ने मेरी शादी गाँव की लड़की शिखा से करवा दी। मैं उससे ठीक से बात तक नहीं करता था। वो मेरे परिवार के साथ ऐसे घुलमिल गई थी, जैसे बरसो से उनके साथ रह रही हो । मुझे ये भी पसंद नहीं आ रहा था। फिर भी वो मेरी हर जरूरत को, बिना मेरे कहे पूरा कर देती थी। मैं तरक्की पर तरक्की कर रहा था। मुझे अपने आप पर बहुत अभिमान था। एक दिन नशे मे धुत्त घर आकर, मैंने शिखा के साथ बल्द्सुलूकी की। मैंने कहा – तुम मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती हो। शरम आती हैं मुझे, जब तुम्हें पत्नी कहना पड़ता हैं। मैं बोलता ही गया। शिखा के लिए यह सब नया नहीं था।

SMARTECH EDUCATION

पर मेरे माता –पिता के लिए ये एक कड़वे घुट के समान था। बिना मुझसे बात किए वो शिखा को अपने साथ ले गए। मैंने ऐसे बीहेव किया, जैसे मुझे काले पानी की सजा से मुक्ति मिल गई हो। जाते वक्त शिखा ने मेरी मेज पर एक डायरी रखी थी, जिसमे मेरी सारी जरूरतों की लिस्ट थी। यह देखकर मुझे गुस्सा आ गया – क्या समझती हैं वो खुद को ? मैं क्या उस पर डीपेंड करता हूँ ? फिर मैंने सोचा – मैं क्यू चिड़ रहा हूँ। वो तो थी ही गंवार अब चली गई। मैं आजाद हूँ, ऐसा सोच मैं ऑफिस चला गया। ऑफिस मे लंच ब्रेक मे जैसे ही मैंने टिफिन खोला। मैंने उस महक को मिस किया, जो रोजाना मेरे थके चेहरे पर मुस्कान बिखेर देती थी। एक पल के लिये मुझे एक अजीब सी कमी महसूस हुई, पर उस वक्त मुझे अपनी आजादी का गुमान ज्यादा था।

समय गुजर रहा था मैं अपनी हर एक जरूरत के लिए डायरी पर डिपेंड करता था। कमी का कुछ अहसास तो था, पर मेरा इगो मेरे सामने आ जाता और मैं फिर अपनी अकड़ मे जीने लगता। मै परेशान जब हो गया, जब मेरा वर्किंग परफॉर्मेंस बिगड़ने लगा। हमेशा अपनी प्रोग्रैस के लिए खुद को सारा क्रेडिट देता था। मैं ये मानना ही नहीं चाहता था, कि मेरी प्रोग्रैस मे शिखा का भी पूरा हाथ था। उसी के कारण मैं अपने जीवन की कई छोटी बड़ी परेशानियों और जिम्मेदारियों से बहुत दूर था और केवल अपने काम पर फोकस करता था।

बेस्वाद खाने मे, मुरझाये फूलों मे, बिखरे घर मे, हर उस जगह, जहां मैं शिखा को देख चिड़ता था, उसे गंवार कहकर निकल जाता था, मुझे उसकी कमी महसूस होने लगी थी, पर मैं ये मान कैसे लेता। एक दिन मन भारी हो गया, फिर मैंने माँ को कॉल किया। वो मेरी आवाज से ही समझ जाती थी, कि मैं परेशान हूँ पर समझते हुये भी माँ ने मुझे इगनोर कर दिया और कहा कि शिखा ने दूसरी शादी का फैसला कर लिया हैं। यह सुनकर मुझे और गुस्सा आ गया और मैंने कॉल कट कर दिया। कुछ दिनों पहले ही मुझे डाक से तलाक से कागज मिले। पता नहीं क्यूँ मैं खुश नहीं हूँ। मैं चाहता तो यही था कि शिखा मेरी ज़िंदगी से दूर हो जाये पर आज मैं बैचेन हूँ। अशफाक़ थोड़ी देर रुककर कहता हैं – अब तुम क्या सोच रहे हो ? राजवीर कहता हैं – शिखा मुझसे बहुत प्यार करती थी, फिर वो कैसे दूसरी शादी के लिये सोच भी सकती हैं ?

SMARTECH EDUCATION

अशफाक़ कहता हैं – वाह मियां ! क्या अभी भी वो आपसे पुछेगी कि आगे बढ़ूँ या नहीं ? आज जब आपको उसकी अहमियत पता चल गई हैं, तब भी उससे सच कहने से झिझक रहे हो। सब कुछ सामने हैं। पर फिर माफी मांगने मे खुद को छोटा महसूस कर रहे हो। मियां ! समझलों अगर अब भी अपने इगो मे रहे, तो फिर मौका नहीं मिलेगा। दोस्तों आदमी का यह इगो ही उसे ज़िंदगी से हरा देता हैं। राजवीर सब जानता हैं, पर उसके अहम के कारण वो शिखा से बात नहीं कह पा रहा हैं। शायद उसे डर हैं कि इस बार शिखा उसे ना न कह दे।

अशफाक़ राजवीर को झँझोड़ कर कहता हैं – जब मैं अशफाक़ होकर मरी हुई बीवी के खातिर मंदिर जा सकता हूँ, तो क्या तुम एक सच स्वीकार नहीं कर सकते ? राजवीर को अशफाक़ की बात दिल पर लग जाती हैं, वो कॉल तो नहीं, पर शिखा को एक मैसेज करता हैं मैसेज डेलीवर होते ही, उधर से कॉल आ जाता हैं। दोनों के बीच लंबी बात होती हैं। और यह एक लंबा कॉल दोनों को वापस मिला देता हैं दोस्तो एक टेक्स्ट के बाद शिखा एक पल नहीं रुकती और कॉल कर देती हैं। यह एक औरत का दिल हैं, वो जिससे प्यार करती हैं, उसे कभी नहीं झुकाती और वहीं एक आदमी, हर उस औरत को झुकाता हैं, जो उससे प्यार करती हैं।

"वक्त किसी का बंधक नहीं, वक्त रहते काम हो जाए तो वह अमूल्य है, वरना पछताने के अलावा कुछ नहीं रह जाता। " जीवन में जो भी मिले उसे स्वीकारने की कोशिश करे, जरुरी नहीं हर चीज जो आप चाहते है वहीँ आपको मिलेगा। लेकिन जो आपको मिला है वह आपकी किस्मत है जिसे अच्छा बुरा बनाना केवल आपके हाथ में है।

SMARTECH EDUCATION